International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(II), April- June, 2025, pp. 117-122

पं. दीनदयाल उपाध्यायः एकात्म मानववाद दर्शन का एक अध्ययन

सरोज सीरवी*

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: sarojseeravi@gmail.com

सार

पं. दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद दर्शन', 'एकात्म अर्थव्यवस्था', एवं 'भारतीय संस्कृतिनिष्ठ राजनीतिक विचार', मौलिक देन है।'

'एकात्म मानववाद दर्शन' पश्चिम विचारधाराओं के विरोध एवं भारतीय संस्कृति के समर्थन का परिणाम है। पश्चिमी विचारों में शाश्वत सत्य या पूर्णता और स्थिरता का अभाव पाया जाता है। वहाँ प्रत्येक नये विचार की शुरुआत प्रतिक्रिया का परिणाम है। उनके विचारों में सर्वत्र एकरूपता का अभाव है। खण्ड–खण्ड में विचार करने की प्रणाली वहाँ प्रचलित है। उनकी प्रत्येक विचारधारा भावात्मक नहीं अपितु ज्ञान, बुद्धि एवं तर्क का परिणाम है। उन्होनें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का अलग–अलग घटकों के रूप में चिन्तन किया। इसमें एकता, समरसता, समन्वयता, पूरकता, पारस्परिकता एवं अनुकूलता का अभाव महसूस तक नहीं किया। यह सही है कि पश्चिमी विचारकों ने उनका सूक्ष्मता से अध्ययन किया किन्तु बाहर से अलग–अलग दिखाई देने वाली इन इकाइयों को जोड़ने वाली जो एक सुदृढ़ आन्तरिक कड़ी होती है, उसको छूने का प्रयत्न तक नहीं किया। पश्चिमी विचारकों ने अपने चिन्तन का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति को माना एवं इसका विचार किया। इसके बाद उन्होंने परिवार का विचार व्यक्ति को परिवार से अलग रखते हुए, समाज का विचार किया, परिवार को अलग रखते हुए एवं समाज को अलग रखते हुए राष्ट्र का विचार किया और इस तरह राष्ट्र को अलग रखते हुए विश्व का चिन्तन किया।

शब्दकोशः *एकात्म अर्थव्यवस्था, संस्कृतिनिष्ठ राजनीतिक, सर्वत्र एकरूपता, समाज, भारतीय संस्कृति।*

प्रस्तावना

इस प्रकार का चिन्तन भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के विरुद्ध है। भारतीय चिन्तन दृष्टि मनुष्य को केवल व्यक्ति न मानकर शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय मानती है और इसी आधार पर उसके व्यक्तित्त्व में 'मैं' के स्थान पर 'हम' के सामूहिक भाव का दर्शन करती है जिससे वह अपने आप को समाज के एक अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करता है वहीं पश्चिमी में मनुष्य और समाज के बारे में एकाकी चिन्तन दृष्टि दिखाई देती है। पश्चिमी चिन्तन के अनुसार सामाजिक जीवन की सृष्टि हुई हैं यह मानकर चलता है कि ''समाज व्यक्तियों का ऐसा समूह है जिसको व्यक्तियों ने आपस में समझौते के द्वारा मिलकर बनाया है, इसलिए वहाँ व्यक्ति महत्वपूर्ण है। भारतीय चिन्तन दृष्टि समाज को स्वयंभू मानती है। इसका मानना है कि जिस प्रकार व्यक्ति पैदा होता है उसी प्रकार समाज भी पैदा होता है। समाज प्राकृतिक है व्यक्तियों द्वारा निर्मित नहीं। समाज स्थापित करने का न तो कोई निवेदन पत्र है और न ही किसी सभा निर्णय के उपरान्त पंजीकरण की व्यवस्था से निर्मित है। समाज एक सहज केन्द्रीय जैविक सृष्टि (*Living Organism*) है।

समाज कृत्रिम मानवीय उपायों से न तो यह बनता और न ही नष्ट होता है। वास्तव में समाज एक ऐसी सत्ता है जिसकी अपनी आत्मा है, जिसका अपना एक जीवन है। समाज की भी व्यक्ति की ही भाँति शरीर,

मन, बुद्धि और आत्मा होती है। व्यक्ति व समाज का अटूट सम्बन्ध होता है। हर पीढ़ी का जुड़ाव आदर्श, संस्कार, परम्परायें हमारी धरोहर होती है तथा इसी के आधार पर जीवित समाज एकात्म रहकर प्रगति कर रहा रहा है। इस आधार पर न तो स्वतंत्रता का अपहरण होता है और न ही समाजवाद का निर्जीव यंत्र बनकर व्यक्ति मूल्यहीन बनता है। भारतीय चिन्तन व्यक्ति के अस्तित्त्व पर समाज के मूल्य भाव का प्रतिपादन करता है।

भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। इसमें सम्पूर्ण जीवन एवं सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार किया जाता है। पं दीनदयाल उपाध्याय प्राचीन भारतीय दर्शन की पुर्नव्यवस्था करते हुए समाज को समता, समानता, सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का नवीन मार्ग दिया और एक दर्शन का प्रतिपादन किया जिसे 'एकात्म मानववाद दर्शन' के नाम से जाना जाता है। एकात्म मानववाद, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं राजकीय सिद्धान्तों का संकलन है जिसमें विश्व, प्रकृति, समाज, व्यक्ति सभी पर सामन्जस्यपूर्ण, समरस कल्याणकारी जीवन व व्यवस्थापन हेतु विचार प्रस्तुत किये है।

एकात्म मानव दर्शन का अर्थ– एकात्म मानव दर्शन मानव–जीवन तथा सम्पूर्ण प्रकृति के एकात्म सम्बन्धों का दर्शन है। यद्यपि यह सच है कि मानव–जीवन के विविध अंगोपांग तथा मानव प्रकृति की विभिन्न शक्तियों में विविधता होती है, किन्तु यह विविधता आन्तरिक एकता के ही विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति हुआ करती है। इसीलिए इन सब में पारस्परिक अनुकूलता और पूरकता होती है। एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति जीवन का भी उसके सभी अंगों को ध्यान में रखते हुए संकलित विचार करता है। मनुष्य प्राणी शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संकलित रूप है। इसीलिए मानव का सर्वांगीण विकास उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा सबका संकलित विचार है। एकात्म मानव दर्शन के मूल में व्यक्ति है। इस दर्शन में व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र एवं उसके पश्चात सम्पूर्ण मानवता एवं चराचर सृष्टि पर विचार किया गया है। एकात्म मानव दर्शन उपरोक्त सभी इकाईयों में अतर्निहित परस्पर पूरक सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए उन पर विचार करता है। भारतीय चिन्तन जगत में सृष्टि व समष्टि को एक पूर्ण के रूप में देखा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार 'मनुष्य मन, बुद्धि, आत्मा तथा शरीर इन चारों का समुच्चय है। हम उसे उसको टुकड़ो में बांटकर विचार नहीं कर सकते है।' मानव की यही समग्रता या पूर्णता उसे समाज के लिए उपयुक्त एवं उपादेय बनाती है। भारतीय चिन्तकों एवं विचारकों द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ, कर्म एवं मोक्ष का विचार भी एकात्म मानव दर्शन में समाविष्ट है। एक पूर्ण मनुष्य को निर्मित करने वाले इन चार तत्वों में एकात्मकता आवश्यक है, क्योंकि यही एकात्मकता मनुष्य को कर्मठता की और प्रेरित कर उद्यमी बनाती है और इसी से समाज का विकास, कल्याण व हित संवर्धन सम्भव हो पाता है।

एकात्म मानव दर्शन का अर्थ स्पष्ट करते हुए श्री शरद अ. कुलकर्णी ने लिखा कि ''एकात्म मानव दर्शन भारतीय संस्कृति का जीवन दर्शन है।' भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है अतः शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्म का से युक्त धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चतुर्विध पुरुषार्थों की साधना करने वाला और एक ही साथ परिवार, जाति, राष्ट्र एवं मानव समाज आदि विविध एकात्म समष्टियों का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखने वाला इस दर्शन का केन्द्र बिन्दु है।''

श्री. वि. वा. नेने के अनुसार– ''एकात्म मानववाद दर्शन व्यक्ति–जीवन का भी उसके सभी अंगों को ध्यान में रखते हुए संकलित विचार करता है। मनुष्य प्राणी शरीर, मन, बुद्धि और आत्म का संकलित रूप है इसलिये मानव का सर्वांगीण विचार उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा सबका संकलित विचार है। व्यक्ति के इन चारों पक्षों की समुचित आवश्यकताओं को पूरा करना, उनकी विविध मांगों और इच्छा आकांक्षाओं को पूरा करने तथा उसका सर्वांगीण विकास करने के लिए भारतीय संस्कृति ने व्यक्ति के सामने कर्तव्य के रूप में चार पुरुषार्थों का आदर्श रखा है। यहाँ व्यक्ति के साथ–साथ नैतिक आध्यात्मिक उन्नति भी अभिप्रेत है जिसमें समाज की सुयोग्यता धारण हो सके।''

एकात्म जीवन दर्शन की व्याख्या– एकात्म मानव दर्शन की व्यष्टि तथा विभिन्न समुदायिक समष्टियों का परस्पर सम्बंधों को मुख्यतः विचारों को विषय बनाया गया है। इस सन्दर्भ में भी वि. वा. नेने ने लिखा–

व्यक्ति जीवन के ही नहीं समष्टि जीवन के परिवार, राष्ट्र, विश्व मानव आदि वृहत् घटकों पर भी विचार पाश्चात्य लोगों ने पृथक–पृथक ही किया। यह सही है कि इन सभी इकाइयों का उन्होने सूक्ष्मता से अध्ययन किया, किन्तु बाहर से अलग–अलग दिखाई देने वाली इन इकाइयों को जोड़ने वाली जो एक सुदृढ़ आन्तरिक कड़ी होती है, उसका विचार ही नहीं किया।

संकेन्द्री रचना

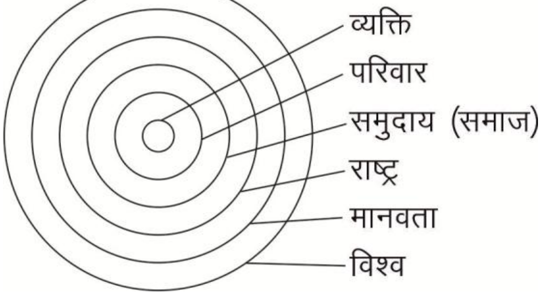

चित्र 1: पाश्चात्य चिंतन को प्रदर्शित करने वाली व्यक्ति और समाज की चक्र गति आरेख ।

आरेख चित्र संख्या–1 में प्रदर्शित चिन्तन में एकात्म सूत्र बोध का अभाव हैं तथा विभिन्न इकाइयों को जोड़ने वाली आन्तरिक कड़ी का भी अभाव है। जैसा संकेन्द्री वृत समूहों की अलग–अलग वृत आकृति से स्पष्ट है कि व्यक्ति के आकृति के चारों ओर परिवार चक्र, तत्पश्चात समुदाय, उससे आगे राष्ट्र का बड़ा चक्र तथा अन्त में विश्व मानव चक्र है। जाहिर है आवृति व्यक्ति को केन्द्र बिन्दु मानकर है किन्तु दोष यह है कि चक्र संकेन्द्री हैं तथा स्वतन्त्र रूप से स्वच्छंद हैं।

अखण्ड मंडलाकार रचना रचना

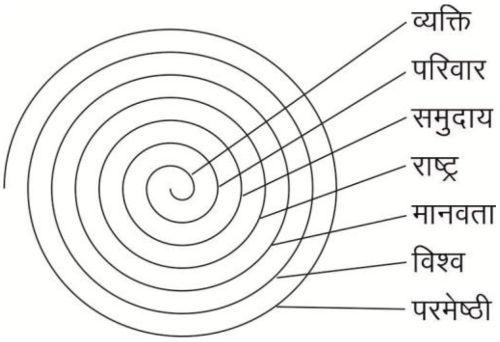

चित्र 2: समष्टि जीवन चक्र, भारतीय चिन्तन दृष्टि अवतरण से शीर्ष की ओर परस्पर आबद आरेख

आरेख चित्र– 2 में प्रदर्शित एकात्म मानव जीवन के सम्बध में भारतीय संस्कृति की इस घटना को अखण्ड मण्डलाकार आकृति द्वारा स्पष्ट की गई गयी है। उसमें प्रत्येक मण्डल उसके आगे तथा पीछे के मण्डल से सम्बन्ध रखकर ही विकसित होती है। इस रचना को आरम्भ व्यक्ति से होता है किन्तु यह व्यक्ति केवल भौतिक सुख या अर्थ–काम के पीछे लगा न रहकर धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। व्यक्ति के बाद अगला मण्डल परिवार का है। परिवार का मण्डल व्यक्ति से प्रारम्भ होता किन्तु उसका सम्बन्ध न छोड़ते हुए उसके चारों ओर विकसित होता हुआ आगे बढ़ता है और समाज मण्डल का सूत्रपात करता है। समाज मण्डल विकसित होकर आगे चलकर राष्ट्रमण्डल में परिणत होता है, और इसी क्रम में आगे बढ़ता हुआ सम्पूर्ण मानव समूह का तथा विश्व का मण्डल तैयार होता है। किन्तु भारतीय व्यक्ति चिन्तन यही पर नहीं रुकता इसका चिन्तन उससे भी आगे के एक और मण्डल का विचार किया है वह है परमेष्ठी

(ब्रह्मण्ड) तत्त्व का मण्डल। यह मण्डल उससे पहले के सभी मण्डलों को अपने में समा लेता है। यही नहीं उसमें स्वयं भी व्याप्त रहता है। कारण यह कि परमेष्ठी तत्त्व सर्वातीत है तथा सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी और सर्वमय है भी है। यह सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापी परम तत्त्व एकात्म मानव दर्शन की आत्मा है।

व्यक्ति का समष्टि के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए अखण्डित सम्बन्धों का सहारा लिया गया है। व्यक्ति का सम्बन्ध परिवार से, परिवार का समाज से, समाज राष्ट्र से, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से, एक सम्पूर्ण विश्व चराचर जगत से अटूट सम्बन्ध है। उसमें संघर्ष नहीं अपितु पूरकता, एकता, पस्परानुकूलता, समरसता एवं समन्वय की भावना निहित है। इस एकात्म मानव दर्शन में व्यष्टि से समष्टि तक सब एक ही सूत्र से जुड़े है। व्यक्ति का विकास होगा तो समाज विकसित होगा, समाज विकसित होगा तो राष्ट्र की उन्नति होगी, राष्ट्र की उन्नति होगी तो विश्व का कल्याण होगा। इसकी मूल धारणा ***'struggle for existence'*** नहीं बल्कि अस्तित्व के लिए सहयोग है। मानव समाज का अस्तित्व प्रकृति के सहयोग के बिना सुरक्षित नहीं हो सकता। जीवन का मंत्र ***'Servival of the SFitest'*** नहीं हो सकता अपितु सभी का सहअस्तित्व, सबका सहयोग, एवं सबका विकास जीवन का मूल मंत्र है। हम अपना अस्तित्व प्रकृति के सहयोग के बिना सुरक्षित नहीं रख सकते। प्रकृति एवं मानव जीवन में ये एकात्मकता सदैव रहेगी। एकात्म मानव दर्शन की जड़े भारतीय दर्शन में ही निहित है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में एकात्म मानववाद दर्शन का महत्व– भारतवर्ष अपनी महान सभ्यता वं संस्कृति के कारण विश्व मंच पर सदैव प्रसिद्ध रहा है एवं अपनी गरिमामयी आभा रश्मियों से विश्व मंच को प्रतिपल आलोकित करता रहा है।

स्वतंत्र राष्ट्र भारत जो लम्बे गुलामी के कारण अपने प्राचीन संस्कारों, मूल्यों एवं आदर्शों को भूल तो बैठा था, के पथ प्रदर्शन हेतु प्राचीन भारतीय भूल्यों पर आधारित एक दर्शन का प्रणयन किया जिसे चिंतन जगत में एकात्म मानव दर्शन कहा गया है।

स्वतन्त्रता के बाद देश ने लोकतन्त्र को सत्ता के लिए स्वीकार किया और कांग्रेस कई वर्षों तक सत्ता में केन्द्र की सत्ता पर आसीन भी रही। इसके बाद सत्ता में बने रहने के लिए आमजन के लिए कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारतमवाद का पंथ अपनाया जो मात्र नारा या मिथ्या प्रलोभन ही रहा। हमें समाजवाद अथवा पूँजीवाद नहीं, बल्कि 'मानव' का उत्कर्ष और सुख चाहिए। इन दोनों ने न तो मानव को समझ सका है और न उन्हें मानव की चिन्ता है। मानव को दांव पर रख कर लड़ रहे हैं। इनके द्वारा विश्व शान्ति की बात की जाती है जो कोरी कल्पना होगी क्योंकि विश्व में दो विश्व युद्ध हो चुके हैं और अनेक राष्ट्र युद्ध झेल रहे हैं। इनकी विचारधाराएँ विश्व शान्ति एवं व्यक्ति को सुख नहीं दे सका। उन सबका कारण 'एकात्मता' का लोप एवं 'मानववाद' का बोल बाला है। आज व्यक्ति भौतिक उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया है। अणु–परमाणु बमों का आविष्कार कर लिया है। चन्द्रमा पर विजय करने वाला मनुष्य अपनी आत्मा पर विजय नहीं कर सका।

हम व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व एवं सृष्टि की स्थिति की ओर देखते हैं तो हमारा मन–मस्तिष्क व्याकुल हो जाता है। सर्वत्र संघर्ष, स्पर्धा, प्रतियोगिता, धोखों, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, शोषण, देश में आन्तरिक कलह, आन्दोलन, हड़तालें, राजनीति आर्थिक–सामाजिक भ्रष्टाचार देखने को मिलता है जिसका कारण है व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व एवं सृष्टि में एकात्मता के भाव की कमी। इस कमी को पूरा करने के लिए हमें एकात्म समाज, एकात्म अर्थव्यवस्था, एकात्म राजनीति अपनानी होगी तभी हमारा कल्याण, उत्कर्ष, विकास हमें सुख दे सकता है। आज भी हमे पं. दीनदयाल द्वारा सुझाये गए एकात्म मानव दर्शन की सही दिशा मिल सकती है। अपने जीवन के लक्ष्य– परम सुख को प्राप्त नहीं कर सके इसका कारण भौतिक सुखों का एकाकी विचार। व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य– शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का समन्वय सुख (परम सुख) की प्राप्ति करना जो चतुर्विध पुरुषार्थ– अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के समन्वय करने ही प्राप्त कर सकता है। सर्वाधिक विकसित एवं विकासशील राष्ट्र अमेरिका एवं अन्य राष्ट्र भौतिक प्रगति उच्च स्तर पर कर ली है किन्तु आश्चर्य की बात है कि यहाँ सर्वसाधारण व्यक्ति के अन्दर सुख, सन्तोष और समाधान का पूर्ण अभाव है। वहाँ पर व्यक्ति के जीवन में परस्पर विरोध, असन्तोष, सर्वाधिक अपराध और आत्म हत्यायें दिखाई देती है। वहाँ प्रगति हुई है तीव्र रक्तचाप

की, हृदय रोग की और अपरावृतिकी। सम्पूर्ण संसार को खरीद सकने की क्षमता रखने वाला अमेरिका भौतिक समाधान से मानसिक समाधान नहीं कर सका। आज परिवार में प्रेम, सहयोग, त्याग, सहिष्णुता के अभाव में परिवार टूटते दिखाई दे रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को पूर्ण समझता है। भाई–भाई, पुत्र–पिता, पति–पत्नि आदि में संघर्ष, टकराहट, ईर्ष्या, प्रतियोगिता के कारण उनमें एकता, सहयोग, प्रेम, त्याग, परस्परानुकूलता का अभाव पाया जाता है। परिवार एवं व्यक्ति को एकात्म मानव दर्शन के विचार ही उनमें समन्वय कर सकता है।

समाज एक सामाजिक समझौते का परिणाम की विचारधारा से व्यक्ति अपने उस समझोते को तोड़ने की सोचता है इसे कृत्रिम संगठन मानता है इसलिये समाज में आज भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं प्रतियोगिता बढ़ी है। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने समाज को एक जीवमान संगठन माना है जिस प्रकार मनुष्य के शरीर के अंगों का संघर्ष नहीं, एकता है उसी प्रकार जीवमान समाज में व्यक्ति–समाज में संघर्ष नहीं परस्परानुकूलता है। एकात्म मानववाद दर्शन के आधार पर हम समाज में शान्ति व समृद्धि का विकास कर सकते हैं। समाज का विकास मनुष्य का विकास है।

एक राष्ट्र के विरुद्ध दूसरा राष्ट्र का संघर्ष, राष्ट्र के आन्तरिक संघर्ष, आर्थिक असन्तुलन, राजनीतिक भ्रष्टाचार का कारण देश काल परिस्थिति के अनुसार उद्देश्य निर्धारित करने के स्थान पर दूसरों की नकल करना है जो राष्ट्र को कभी सही दिशा नहीं दे सकते, इसलिये देश की इच्छानुसार, सांस्कृतिक, भौगोलिक स्थिति के अनुसार (संकल्प) संविधान का निर्माण करना चाहिए तभी देश की आत्मा (राष्ट्र की स्वतन्त्रता) सुरक्षित रह सकती है एवं विकास की गति को बल मिल सकता है।

विश्व आज भीषण सभ्रम के चौराहे पर खड़ा है। विश्व–युद्ध की चिनगारी कभी भी सुलगाकर सम्पूर्ण मानव को नष्ट कर सकती है। इसको बचाने का एक ही उपाय है– एकात्म मानववाद, विश्व–बन्धुत्व, वसुधैव कुटुम्बकम, मानव कल्याण, एक पृथ्वी एक परिवार की भावना का विकास करें।

आज स्थिति यहाँ तक आ पहुंची है कि मनुष्य विकास के नाम पर प्रकृति के साथ छेड़–छाड़ कर रहा है। आज पर्यावरण व खनिजों की समस्या की चिन्ता खाई जा रही है। मानव समाज का अस्तित्व प्रकृति के सहयोग के बिना नहीं हो सकता। जीवन का मन्त्र 'servival of the fitest' *नहीं* हो सकता अपितु सभी का सह अस्तित्व, सबका सहयोग एवं सबका विकास जीवन का मूल मंत्र है। प्रकृति एवं मानव जीवन में ये एकात्मकता सदैव रहेंगी।

एकात्म मानव दर्शन के सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापी परम तत्वों को समाज के घटकों को इस दर्शन के सभी अंगों से संस्कारित करते हुए जीवन के भौतिक अभ्युदय से सम्बन्ध रखने वाले राजनैतिक, अर्थनीति, समाजनीति, आदि समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में इस दर्शन के संजीवक संस्कारों को पहुंचाना चाहिए तभी परिपूर्ण मानव की कल्पना साकार हो सकती है।

निष्कर्ष

पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन प्राचीन भारतीय संस्कृति की अवधारण 'वसुधैव कुटुम्बकम' एवं सर्वे भवन्तु सुखिन' का दुसरा रूप है। एकात्म मानव दर्शन आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं राजकीय सिद्धान्तों का संकलन है जिससे विश्व प्रकृति, समाज, व्यक्ति, सभी पर सामान्जस्यपूर्ण, समरस कल्याणकारी जीवन व व्यवस्थापन हेतु विचार राष्ट्र ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में मानवता मूलक समाज की स्थापना के लिए पूर्णतः प्रासंगिक है। पाश्चात्य विचारों के विरुद्ध खोई हुई भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को उजागर कर राष्ट्र एवं विश्व को एक नई राह दिखाने का प्रयास है। भयमुक्त, क्षमतामूलक, लोकतात्रिक, कल्याणकारी एवं मानवीयता मूलक समाज की रचना करना एकात्म मानव दर्शन का उद्देश्य है। मानव जीवन की सुगमता व सामंजस्य मानव समूह, राष्ट्र और सृष्टि के साथ कैसे स्थापित होगा, जीवन से दुख, अभाव, शोषण, विषमता आदि को हराकर सुख, समृद्धि, सामंजस्य, सेवाभाव, समता, समानता लाने वाली नीतियों क्या होगी, युगानुकूल सामाजिक पुर्नरचना कैसे सम्भव हो जैसे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास है। एकात्म मानव दर्शन आज व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व एवं चराचर जगत के लिये अति उपयोगी ही नहीं अति आवश्यक भी है। उनका

उद्देश्य आदर्श राज्य की कल्पना थी। अपने उदेश्य प्राप्ति के लिए वे प्रजातन्त्र, राष्ट्रवाद समानता और विश्व एकता के एकात्म को प्राप्त करते के लिए मानवीय चेतना का विकास विश्व चेतना के स्तर तक करना चाहते थे। ''एकात्म मानव दर्शन'' उपाध्याय जी के मौलिक विचार थे जो भारतीय संस्कृति का एक परिचय करता है। वर्तमान विश्व, राष्ट्र, समाज, परिवार एवं व्यक्ति की प्रत्येक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास है। एकात्म मानव दर्शन, राष्ट्र ही नही सम्पूर्ण विश्व के लिए भी हमेशा प्रासंगिक रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री शरद अ. कुलकर्णी, 'एकात्म अर्थनीति'
2. दत्तो पंत ठेंगड़ी, 'एकात्म मानव दर्शन–एक अध्ययन', लोकहित प्रकाशन, लखनऊ
3. मा.स. गोलावलकर (पूज्य श्री गुरूजी) 'परिपूर्ण मानव' राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ
4. विनायक वासुदेव नेने, पं. दीनदयाल उपाध्याय, विचार–दर्शन खण्ड 2 ''एकात्म मानव दर्शन, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली
5. दीनदयाल उपाध्याय, 'भारतीय अर्थ–नीति विकास की एक दिशा', आधारभूत लक्ष्य', लोकहित प्रकाशन, लखनऊ
6. डॉ. धीरज सिंह– पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन : एक परिचय, शोध मन्थन, Vol-9 Issue 4, Dec. 2018
7. डॉ. सुशील कुमार त्रिपाठी और डॉ. रवि प्रकाश सिंह– KIJAHS, APR-JUN 2016, Vol-3 / Issue 2, A 40
8. विवेक कुमार सिंह– 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद', Sociologgjournal.in, Volume 3, Issue 2, 2021

❖◆❖